श्रीमत पर चलने से देवी–देवता पद की प्राप्ति हो रही है, विश्व की बादशाही मिल रही है, तो हम औरों की उल्टी मत क्यों लेवें ? जो मस्त होते हैं, जिनको बिल्कुल पक्का निश्चय होता है, वो फिर डरती नहीं है या डरता नहीं है। कोई की मत पर अपना मर्तबा कम करने के लिए वो डरता नहीं है; (क्यों)कि वो समझते हैं। जैसे देखो बच्ची, बहुत हैं जो कहती हैं हम बाँधेली हैं। अभी बाँधेली हैं और ऐसे कहती है कि बाँधेली हैं, इसका अर्थ ये रहता है कुछ कच्ची हैं; क्योंकि कोई जनावर तो नहीं है जिसको कोई ने बाँध लिया है, जबकि वो जानते हैं मुझे ईश्वर से वर्सा मिलना ही है। जिसको(जो) निश्चयबुद्धि हो जाता है कि मुझे बाप से वर्सा मिलना है और बरोबर मैं यात्रा पर हूँ, यात्रा पर न रहने से मेरे वर्से में विघ्न पड़ जाएगा, तो वो बड़े मस्त हो जाते हैं, उनको फिर दुनिया की कोई परवाह नहीं रहती है। एक दिन ऐसे भी होगा जो ऐसी निश्चयबुद्धि कारण बताएगी कि मैं अपने पति को क्यों छोड़ती हूँ। तो देखो, तुम्हारा नाम तभी निकले, जब कोई स्त्री निकले कि मैं अपने पति को वर्सा क्यों देती हूँ ? हमको कोई और दुःख नहीं है, एक कि मैं पवित्र रहना चाहती हूँ और बाप से वर्सा लेना चाहती हूँ; इसलिए इनकी मत पर मैं कुछ भी उल्टा काम नहीं कर सकती हूँ। उल्टा काम है ही विकार का। मस्त कोई हो एकदम मजबूत तो फिर उनको कोई परवाह नहीं रहती है; क्योंकि वो ऐसी नष्टोमोहा होनी चाहिए; क्योंकि उनको ईश्वरीय नशा चढ़ जाता है ना और सच्चा नशा चाहिए। उनको फिर कोई रोक नहीं सकता है। जब तुम पहले आई थीं तो बहुत पक्का नशा था, तभी तो देखो यहाँ–वहाँ कितनी खिटपिट मची। तुम(ने) कोई भी बात की परवाह नहीं की। बहुत बच्चे लिखते हैं– बंधन है, बंधन है, बंधन है। वास्तव में बाप से बेहद का वर्सा लेने के लिए उन सब बंधन को डायवोर्स दिया जा सकता है, अगर नष्टोमोहा हो तो। कोई विघ्न डाले तो बाबा कहते हैं। अगर कोई विघ्न नहीं डालते हैं, छूट छोड़ते हैं तो भले लो; क्योंकि वो कहते हैं कि हम गृहस्थ–व्यवहार में रह सकते हैं और हमको बेहद के बाप से वर्सा लेने के लिए पवित्र रहना है; क्योंकि वो कहते ही हैं कि देह का अहंकार छोड़ अपन को देही समझ और मुझ अपने बाप से योग लगाय, इस यात्रा से विकर्माजीत बन राज्य लो। स्वदर्शनचक्रधारी या चक्रधारी। तो उनको कोई रोक नहीं सकते हैं। एक दफा बुद्धि में अच्छी तरह से नशा बैठ जावे। नहीं तो तुम बच्चों ने पहले कुछ इतना ज्ञान भी नहीं लिया था; परन्तु ड्रामा की भावी। अरे, सिर्फ पवित्रता के कारण तुमने झट...। ऐसे भी नहीं कोई जास्ती ज्ञान सुना था। तुमने झट भट्ठी बन गई, ये छोड़ दिया। इतना झट छोड़ने वाला अभी नहीं निकल सकते हैं।... परन्तु इस ज्ञानमार्ग में इन खयालात की नहीं रहती है, जबकि उनको निश्चय होता है कि बाप से हमको बेहद का वर्सा मिल रहा है और समझ जाते हैं कि कल्प पहले भी मिला था, अभी हमको मिलता है। तो फिर वो कोई के भी बंधन में नहीं रहती है। वो उनको समझा देती है। बात समझाकर फिर बोल भी देती है अगर विघ्न डालते हो तो फिर मुझे छोड़ना पड़ेगा। इसके कारण डायवोर्स देना पड़ता है। क्योंकि... देखो, विलायत में किसको कोई साहूकार मिलता है तो डायवोर्स दे देती है। उनको बहुत अच्छा पसन्द का मिल जाता है तो जिनको ऐसा है, छोड़ देते हैं। अभी यहाँ तो किसको भी ये दुनिया पसंद नहीं है या मित्र–संबंधी वगैरह कोई भी पसन्द तो नहीं हैं। मनुष्य को पसन्द है बेहद का बाप, जिसको याद करते रहते हैं। ये भी तो सिद्ध होता है। तो जब जो पसन्द करते हैं बाप को, अगर वो चीज़ मिल जाए तो फिर कोई की परवाह नहीं की जाती है। फिर रहना भले होता है; क्योंकि बाप फिर डायरेक्शन देते हैं कि गृहस्थ–व्यवहार में रहो। अगर कोई खिटखिट करे तो फिर तुम एसलम ले सकती हो। अगर कोई ऐसे कहे कि मुझे बाप से वर्सा लेना है; इसलिए ये अगर डायवोर्स भी देते हैं तो मैं बहुत खुशी से लेती हूँ। कोई खिटपिट करने की दरकार नहीं है। तो वो कहाँ अच्छा नाम निकाले। ऐसे–2 केस भी होंगे; परन्तु चाहिए बड़े मजबूत ; क्योंकि घर छोड़ करके ईश्वर का एसलम लेना, बाप का एसलम लेना, फिर याद पड़ती है ना कि माया फिर आ करके उछल खाती है। ऐसे नहीं होने चाहिए।...बड़ी पक्की निश्चय वाली है। उनको आपे ही ख्याल होगा (कि) हमको तो कोई भी रोक नहीं सकते हैं। समझाती है कि मुझे पवित्र रहना है, मैं सब कुछ करने के लिए तैयार हूँ; क्योंकि डायरेक्शन मिलता है कि गृहस्थ–व्यवहार में रह करके और मेरे से वर्सा लो; परन्तु अगर

कोई बंधन होता है तो कच्ची नहीं होनी चाहिए, नहीं तो देखो यहाँ भी कच्चियाँ आती हैं तो बड़ा तंग करती हैं। पीछे मित्र–संबंधी याद पड़ते हैं तो फिर वो तंग बहुत करती हैं। फिर वायुमण्डल भी खराब हो जाता है। अगर बुद्धियोग चला जाता है कलियुगी... उन तरफ तो वो संकल्प और उसका टूटा हुआ योग बहुत नुकसान करता है। यज्ञ में ऐसे–2 नुकसान पड़ने के कारण ही तो यज्ञ को सफलता प्राप्त करने के लिए इतना समय लगता है ना। ऐसे बहुत रहते हैं जिनको बाहर की बहुत यादगिरी रहती है– कोई को मित्र की, किनको संबंधी की, किनको किसकी, किसको किसकी, किसको किसकी। नहीं तो एक दफा खुशी का पारा चढ़ गया तब तो फिर मज़ा है। ज्ञान है बहुत मीठा ; परन्तु आहिस्ते–2 ये झाड़ की वृद्धि होती है। ये भी सभी बच्चे तो समझते हैं कि झाड़ की वृद्धि होनी ही है। कल्प पहले ही होने वाली है। ये जो इतना समय पास्ट हुआ वही सच्चा ड्रामा, पक्का ड्रामा। विघ्न तो पड़ते ही हैं ना। विघ्न पड़ते हैं और फट कहा जाता है– ये विघ्न तो कल्प पहले भी पड़े थे और वही विघ्न पड़ेंगे जो कल्प पहले पड़े थे। साक्षी होकर देखते चले जाना चाहिए और हर एक को ऐसे ही समझना चाहिए कि मेरे भी बाप से वर्से में जो विघ्न पड़ता है, ये कल्प पहले भी हुए हैं और इनको तोड़ निभाना है, युक्ति रचनी है। ये जो–2 करते रहे उनको ये समझें कि ये भी ड्रामा। रस्सी टूट पड़े तो भी ये ड्रामा। देखो, कोई की कच्ची रस्सी टूट पड़ती है तो भी कहते हैं– अच्छा, ये भी ड्रामा। ये परिपक्व अवस्था में निश्चयबुद्धि न हो करके आए हैं। ये प्रण करते हैं कि मेरा तो एक दूसरा न कोई। फिर दूसरा कोई तो माना अवस्था कच्ची। तो वायुमण्डल खराब रहता है; इसलिए टाइम लगता रहता है। बाकी जिसको ये सारी नॉलेज बुद्धि में अच्छी तरह से घूमती रहती है, उनको तो अतीन्द्रिय सुख अच्छा समय तक भासता होगा। ...कोई भी मनुष्य के पास ये ऊँचे–ते–ऊँची नॉलेज नहीं है। रचता को जानना और रचना के आदि,मध्य को जानना। फिर जान गया तो बाकी क्या चाहिए ! ....जानने से समझ आती है कि अभी तो फिर से हमको अपनी बादशाही मिल रही है। तो कौन है जो बादशाही को छोड़े ! जिसको याद करने से ही बादशाही मिलती है तो कितनी याद भी करनी चाहिए ! अच्छा, चलो बच्ची ! कुम्भ का मेला भी लगता है ना। आगे तो ये प्वाइंटें नहीं थीं, अभी प्वाइंटें मिली हैं। वो जो वहाँ यात्रा पर आने वाले हैं उनको ये मिले कि सोच करो– पतित–पावन ये पानी के सागर से निकली हुई पानी की गंगाएँ (हैं) या ज्ञान सागर पतित–पावन, उस ज्ञान सागर से निकली हुई ज्ञान–गंगाएँ हैं ? इस पहेली को हल करने से तुम पतित से पावन बन सकते हो। पावन दुनिया का मालिक बन सकते हो अथवा जीवनमुक्ति पा सकते हो। है तो बहुत ठीक ना। प्रजापिता ब्रह्माकुमारियों की एड्रेस तो पड़ी हुई है। ये भी अगर बड़े अक्षर में बाँटा जाए तो भी मनुष्य समझें कि ये जो बाँटते हैं, इनमें भी कुछ राज़ है कि सिर्फ ये पहेली समझने से तुमको एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिल सकती है। ये भी बड़ी बात है। जास्ती नहीं, खाली ये बता करके– बहनों–भाइयों ! तुम सोच–विचार करो कि पतित–पावनी ये सागर से निकली हुई पानी की गंगाएँ हैं या ज्ञान सागर से निकली हुई ज्ञान की गंगाएँ हैं। अगर इस पहेली को हल करेंगे तो सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिल सकती है। ये कोई कम बात थोड़े ही है; क्योंकि फिर तो बताना पड़ता है ना। बाप कहते हैं कि मुझे याद करने से तुम्हारा सब विकर्म विनाश हो जाएगा। तो पतित–पावन कहते हैं ना। योगाग्नि से तुम जो आयरन एज में हो, सो गोल्डन एज में आ जाएँगे। इसी को तो कहा जाता है ना– मन्मनाभव। ये मामेकम् याद करने से तुम फिर जो आयरन एज में हो, तमोप्रधान हो, सो सतोप्रधान बन जाएँगे। थोड़ी भी समझानी से तीर अच्छा लग सकता है। तो पर्चा बाँटना चाहिए सिम्पल करके। फिर किस्म–2 के पर्चे बाँटते हैं तो भी कोई हर्जा नहीं है। समझो कि बहुत ही पर्चे छप गए हैं। अच्छा, फिर कोई प्वाइंट ऐसी और ही सहज निकलती है, झट छपाया कि सिर्फ इस पहेली को हल करने से तुम सेकेण्ड में जीवनमुक्त पद पा सकते हो। तो वो भी वण्डर खावे ! अच्छे बड़े अक्षर में इतना पर्चा हो तो भी अक्षर कितना रहेगा। (म्युज़िक बजा) ब्लाक जास्ती देने से सस्ता पड़ सकता है ? बोलेंगे, जनरल ब्लाक बनाओ। यादप्यार और गुडनाइट।